ॐ

" कलौतु केवला भक्तिः "

शब्द संग्रह

Shabd Sangrah

भगवद्भक्ति आश्रम, रामपुरा

(रेवाड़ी)

Registered (रजिस्टरी कीगई)

३००० प्रति] सं० १६८० [मूल्य प्रेम

गयादत्त शर्मा के प्रबन्ध से
केवल टाइटल और पृष्ठ ३३ से ४० तक
गयादत्त प्रेस बड़ा दरीबा देहली में छपा।

ओ३म्

सत्य शब्द संग्रह ।

ओ३म् तत् सत् परब्रह्म परमात्मने नमो नमः
श्री सच्चिदानन्दा नन्त स्वरूपाय नमो नमः

दोहा

नमो नमो गोविंद गुरु, बिनवौं अभिजन सोय ।
पहिले भये प्रणाम तिन नमो जो आग होय ॥
नमो नमो श्री राम जू सत् चित् आनन्द रूप ।
जेहि जानत जग स्वप्नवत नाशत भ्रम तम कूप ॥
ओ३म् निरंजनं दुःख भंजनं ररंकार ओङ्कार ।
सत्य पुरुष सोऽहं तुही, अलखं सर्वाधार ॥

शब्द १

ओं निरंजन ररंकार प्रभु, सोऽहं सत्य नाम कर्तार ।
अच्युत गुरु गोविन्द दातार, परमानन्द रूप निर्धार ॥टेक
एक अखण्ड ज्ञान भण्डार, तुमरी ज्योति का उजियार ।
मैं मैं मैं पन सर्वाधार, नेति नेति कर वेद उचार ॥ १ ॥

एक आत्मा अपरम्पार, शंकर ब्रह्म सर्व का सार
ओत प्रोत सबमें निरंकार, जीवन प्राण आप ओंकार ॥२॥
हरि नारायण अग्नि तार, देव देव मैं कर हूँ पुकार ।
कृष्णानन्दा चाहूं गोहराऊँ, फल आज्ञा सर्व पसार ॥ ३ ॥
विनवौं तुमको बारम्बार, प्रीतम प्यार करो उद्धार ।
नमन गणपति नैन मंझार, होवे अनन्त तुम्हें नमस्कार ॥४॥

शब्द २

हरि नारायण हरि नारायण नारायण हरि ओ३म् ॥ टेक
भव दुःखहारण, सब सुखकारण, पतित उधारण प्रभु ओ३म् २।
शुद्ध सच्चिदानन्द स्वरूपा, अगम अरूपा शिव ओ३म् २।
निगम निरूपा सुर नर भू[illegible], ज्योति स्वरूपा प्रभु ओ३म् २ ।
अनन्त अपारा पार न वारा, निरधारा हरि ओ३म् ।
ब्रह्म विकाश स्वयं प्रकाश, जगन्निवास स्वामी ओ३म् ।
राम गोविन्द परमानन्द, कृष्ण मुकुन्द गुरु ओ३म् ।

शब्द ३

दीनानाथ दयानिधि स्वामी, कौन भांति मैं तुम्हें रिझाऊं ।
श्री गंगा चरणों से निकली, दूजो नीर कहां से प्रभु लाऊं ॥
कामधेनु कल्प-वृक्ष तुम्हारे, कौन सो पदारथ भोग लगाऊं

चार वेद तुम मुख से भाखे, और कहा प्रभु पाठ सुनाऊं ॥
अनहद बाजे बजत तुम्हारे, ताल मृदंग क्या शंख बजाऊं।
कोटि भानु जाके नख की शोभा, दीपक लै प्रभु कहां दिखाऊं ॥
सबरी धारा चरणन को चेरो, कौन द्रव्य प्रभु भेंट चढ़ाऊं।
तुम त्रिलोकी के हरता करता, तुम्हें छोड़ प्रभु कौन पै जाऊं ॥
सूर श्याम प्रभु विपत विदारन, मनवांछित फल तुमही से पाऊं

शब्द ४

हमारे प्रभु एक तुमही ओंकार
मात पिता गुरु बन्धु सहोदर, धन त्रिया परिवार ॥ टेक।
मन बल बुद्धि सब तुमही हो, नयनन में उजियार।
हरि हो कर हरे रंगमें रोले, पत्र पुष्प फल डार ॥१॥
धरणी आकाश शशी अरु तारे बिजली में चमकार।
ऊपर नीचे पर्वत सागर, सब तुम अपरम्पार ॥ २
तुम ही सूरज में हो गरमी, वर्षा अमृत धार।
एक धुनी हो तुमसे सब की, तुम्हरा वार न पार ॥३॥
सुन्दर शक्ति विकास सुहना, हमको दे दातार।
काम क्रोध मद लोभ निवारो, परमानन्द हो प्यार ॥४॥

शब्द ५

महरम हो सोई जाने भाई साधो, ऐसा देश हमारा है रे

बिन बादल बिजली वहां चमके, बिन सूरज उजियारा है रे।
बिना नयन वहां मोती पुरोवें, बिन स्वर शब्द उचारा है रे।१।
भंवर गुफा में अनहद बाजे, मुरली बीन सितारा है रे।
निरमल बूंद मिला दरिया में, नहीं मीठा नहीं खारा है रे।२।
काल कर्म वहां सूझत नाहीं, ना वहां वेद विचारा है रे
वहां जाय ब्रह्म बन बैठे, कहन सुनन से न्यारा है रे।३।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, पहुँचेगा पहुँचन हारा है रे।
इस पद को जो समझत बूझत, अलख लखे सोई प्यारा है रे।४

शब्द ६

मेरे सारे दुःख बिसर गये, सतगुर की मैंने शरण लई ॥टेक॥
और सखी सब दूबली, तू बिरहिन क्यों लाल।
अविनाशी की सेज पर, मीरां हुई है निहाल ॥१॥
अविनाशी की सेज को, वह कितना विस्तार।
कहन सुनन की गम नहीं, पीहत बेपरवाह ॥२॥
रूपवन्ती पीहर बसे, अन्तर पिव का ध्यान।
कहती तो लाजां रहे, ऐसा है आतम ज्ञान ॥३॥
हंसो नहीं मुसका गई, रहे टक टके नैन।
कहैं कबीरा लख गये, सखी सखी के सैन ॥४॥

शब्द ७

मेरा मन बानियाँ रे, अपनी बान कभी ना छोड़े ॥ टेक ॥

हेर फेर के दोनों पलड़े, अन्दर कानो डांडी ।
मन में झूठ कपट हिरदे में, हाठ बोलते मोड़ो ॥१॥

पूरे बाट परे सरकावे, कमती बाट टटोले ।
पासंग माहीं डांडी मारे, बेगा बेगा बोले ॥ २ ॥

घर तेरे में कुबत्र किवाड़ी, छिन छिन में चित चोरे ।
कुनबा तेरा बड़ा हरामी, अमृत में विष घोले ॥३॥

जल में तूही थल में तूही, घट घट में हर बोले ।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, भरम बंधा जग डोले ॥४॥

शब्द ८

वा घर कभी न जाना जो जाके हिरदे ही में पाप ॥टेक॥

मात पिता का कहा न माने गुरु के नहीं वचन में ।
पर तिरया से नेह लगावे, सुरति नहीं भजन में ॥१॥

कंचन मैल कभी न होवे, दाग रति न लागे ।
गठरी उसको कौन छीन ले, पहरे अपने जागे ॥२॥

बाहर उजला अन्दर काला, बुगले का सा भेष ।
बाहर मेल द्वेष हिरदे में भक्ति लगे ना लेश ॥३॥

गुरुमुख सो तो पार उतर गये, भवसागर जल तरिया।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, हरका सुमरण करिया ॥८॥

शब्द ९

हीरा मन समझियो रे लोभी, ये सिरने का घाट ॥ टेक ॥
कथनी के शूरे घने बांधे सब हथियार।
रन कोई बिरला डटै, जित बाजे तलवार ॥१॥
शूरा रण में जाय के, किस की देखे बाट।
ज्यों ज्यों पग आगे धरे, आप कटे चाहे काट ॥२॥
हीरा बीच बजार के, सब निरखें साहूकार।
जबलों जौहरी ना मिले, तब की अकल गुबार ॥३॥
सती को सत चढ़ गई, कर प्रीतम से प्यार।
तन मन अपना जाल के, मोह मिटा दई छार ॥४॥
तन मन सौंपो गुरु अपने को, सत्य शब्द पहिचान।
मुश्किल से आसान हो गई, जब से सौंप दई जान ॥५॥
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, लीजो आप संभाल।
चेता जाय तो चेत बावरे, नातर आयगो पकनो काल ॥६॥

शब्द १०

घायल ना सोवे, जाके लगे शब्द के सेल ॥ टेक ॥

लागी लागी सभी कहैं है, लागी नाहीं एक ।
लागी जब ही जानिये रे, बाघ न आवे मेल ॥ १ ॥
लागी उनको जानिये रे, राज तजे अलबेल ।
अन्दर होवा बस रहा रे, चला प्रेमका तेल ॥ २ ॥
पढ़ना लिखना है नहीं रे, सत् संगत का खेल ।
चार वेद घट में बसे हैं, साचे गुरु से मेल ॥ ३ ॥
सत् संग सार अनेक हैं रे, काटें यम की बेल ।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, झूठे जगतके खेल ॥ ४ ॥

शब्द ११

गली तो चारों बन्द पड़ी, म्हारो पिया से मिलन कैसे होय ॥
काम क्रोध मद लोभ मोह ने घेरी न्यारी गैल ।
इन गलियन मेरे प्रीतम बसते कैसे करूं मैं वाकी सैल ॥१॥
पांच पच्चीस पहरवा ठाडे रोक लिये सब ठाम ।
बड़ विधना ने कैसी कीनी बैरी बसायो म्हारे गाम ॥२॥
आशा तृष्णा खड़ी दुहेली इनमें रहा समाय ।
कनक कामिनी गहरा फन्दा अन्त तजो नहीं जाय ॥३॥
ज्ञान भक्ति वैराग योग को मारग दिया बताय ।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो ना कोई आवे न जाय ॥४॥

शब्द १२

आपही धारमधारी म्हारे सतगुरु आप हो खेल खिलारी हो ॥
तम्बू से असमान बनाये ज़मी ग़लीचा डारी है।
चांद सूरज दो मिसल बनाये तारागण फुलवारी है ॥१॥
सुरत निरत की चौसर मांढ़ी लो पासा जग सारी है।
जिसकी नरद जीत घर आवे सो नर सुघड़ खिलारी है ॥२
सतको चीन्ह विहंगम चौरा जिसकी शून्य अटारी है।
जा पर सतगुरु राज़ी होगये उसका जगत भिखारी है ॥३।
अमर लोक को किया पयानर ज्ञान घोड़े असवारी है।
कहत कबीर सुनो भाई साधो अब के जीत हमारी है ॥४॥

शब्द १३

रे मन क्यों भूला मेरा भाई ॥ टेक ॥
सुपने में राजा राज करत हैं हाकिम हुकुम दुहाई।
भोर भई अब लावन लश्कर आंख खुली सुध आई ॥ १ ॥
पक्षी आन वृक्ष पर बैठे रल मिल चोलहर लाई।
भोर भई जब आप आपने जहां तहां उठ जाई ॥ २ ॥
भाई बन्धु और कुटुम्ब कबीला नाता सगा सगाई।
आदि अन्त मध्य तुही २ है झूठी मान बड़ाई ॥ ३ ॥

सागर एक लहर बहु उपजै गिनती गिनो न जाई ।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो उलटी लेहर समाई ॥ ४ ॥

शब्द १४

भजन बिन बावरे तैंने हीरासा जन्म गंवाया ॥ टेक॥
कभी न आया सन्त शरण में ना कभी हरि गुण गाया ।
बहु २ मरा बैल की नाई सोय रहा उठ खाया ॥ १ ॥
ये संसार हाठ बनिये को सब जग सौदे आया ।
चातर माल चौगुना कीना मूरख मूल ठगाया ॥ २ ॥
यह संसार फूल संभल का सूवा देख लुभाया ।
मारी चोंच रुई निकस्याई मूरखो धुन पछताया ॥ ३ ॥
ये संसार माया का लोभी ममता महल चिनाया ।
कहत कबीर सुनो भाई साधो हाथ कछू नहिं आया ॥ ४

शब्द १५

मन्दिर में कांईयों ढूंढ़ती फिरे कुंजगली में भगवान ॥ टेक ॥
मूरत तो मन्दर में मेली वह ना मुख तें बोले ।
करनी पार उतरनी बन्दे वृथा जन्म कांईयों खोले ॥१॥
नाक मुख ते गंगा निकली पाँचों कपड़े धोले ।
बिन साबुन तेरा मैल कटे है हर भज हौला हौले ॥२॥

तनकर कुण्डी मनकर साबुन याहो में शील समोले।
सुरत ज्ञानका करे न मोगरा दिलकी दुरमत धोले॥३॥
शील सत्य की नवका चढ़के हर के दर्शन जोले।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो पर्वत राई के ओले॥४॥

शब्द १६

बागों न जारे तेरी काया में गुलज़ार॥ टेक॥
करनी क्यारी बोय के रे रहनी कर रखवार।
दया पौद सूखे नहीं शीलक्षमा जल डार॥१॥
मन माली पर बोध के रे संयम की कर बार।
दुर्मति काग उड़ायके रे देखें क्यों न बहार॥२॥
मन गुलाब चित केवड़ा रे फूल रही फुलवार।
मुक्ति कली खिल रही रे गूंथ पहरले हार॥३॥
लोभ लहर गहरी नदी रे लख चौरासी धार।
निगुरे २ बह गये रे सन्त उतर गये पार॥४॥
अष्ट कमल दल ऊपर रे महिमा अपरम्पार।
कहत कबीर सुनो भाई साधो आवागवन निवार॥५॥

शब्द १७

खोयो मूला वेदा आयो, गुरु प्रताप साधु की संगत

सोग कुटुम्ब सब आयो ॥ टेक ॥
ममता माई अम्मन आई पाप पुण्य दोऊ भाई ।
काम क्रोध दोउ काका आये आई तृष्णा दाई ॥ १ ॥
राग द्वेष पारोसी आये शुभ अशुभ दोउ मामा ।
मोह नगरका राजा आयो तब पहुँचो सब धामा ॥२॥
दुविधा दादी कहँ बड़ दादा सुख देखत ही मूआ ।
मंगल चार बधाई बाजी जब यह बालक हुआ ॥ ३ ॥
ज्ञान नाम धर्यो बालक को शोभा बरणी न जाई ।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो घट २ रहा समाई ॥४॥

शब्द १८

शब्द ही शब्द भयो उजियारो सत्य गुरु भेद बतायो,
अपन को आपा ही में पायो ॥ टेक ॥
जैसो कामिन सुत ले सोई सुपने माहीं गुमायो ।
जाग परी पलिका पर देखो ना कहीं गयो न आयो ॥१॥
जैसे कमरी कंठ को हीरा आभूषण बिसरायो ।
संगकी सहेली मिल भेद बतायो जीवको भरम नसायो ॥२॥
जैसे मृग नाभि कस्तूरी डोलत बन बन धायो ।
माथा स्वांस भई जब आये पलट निरन्तर आयो ॥ ३ ॥
कहा कहूँ या सुख की महिमा गूंगे ने गुड़ खायो ।

कहैं कबीर सुनो भाई साधो ज्यों का त्यों दरशायो ॥४॥

शब्द १९

लाडो मेंडुकी री तू तो पानी में की रानी ॥ टेक ॥
कछवा तेरा भैया भतीजा चील लगे दौरानी।
बुगला तेरा छोटा देवर वाय देख मुसकानी ॥ १ ।
अन्धे ने मणि के को बींधा बिन अंगुली सुई चलानी।
बिन ग्रीवा के माला पहरी बिन जिह्वा के बाणी ॥२॥
चार चिरैया मंगल गावें टींटा ताल बजावे।
सुतन वहुर गधैया नाचे ऊंट बिलन पद गावे ॥३॥
कहैं कबीर सुनो भाई साधो यह पद है निर्वाणी।
जो इस पदकी निन्दा करे है वाको नरक निशानी॥४॥

शब्द २०

तन मन धन बाजी लाग रही ॥ टेक
चौपड़ मांड़ी पोव से रे तन मन धन बाजी लाय।
हारी तो पोव की भई रे जीतूं तो पीया मेरा रे ॥ १ ॥
चार गली घर एक है रे वर्ण वर्ण के लोग।
मनसा वाचा कर्मणा हे प्रीत निभैयो ओड़ ॥ २ ॥
लख चोरासी भरम के हे पोह पर अटको आय।

जो अबके पोह ना पड़े है बहुर चौरासी जाय ॥ ३ ॥
कहैं कबीर धर्मदास को है जीत भई को हार ।
अबके जो बाजी जीत जाव रे सो ही सुहागन नार ॥४॥

शब्द २१

मेरी सुरत सुहागन जाग री ॥ टेक
क्या तू सोवे मोह नींद में उठके भजन विच लागरी ॥ १ ॥
अनहद शब्द सुनो चित देके उठत मधुर धुन राग री ॥ २ ॥
चरण शीश धर विनती करियो पावे अचल सुहाग री ॥ ३ ॥
कहत कबीर सुनो म्हारी सुरता जगत पीठ दे भाग री ॥ ४ ॥

शब्द २२

शब्द झड़ लाग्योरी बरसण लाग्यो रंग ॥ टेक ॥
जन्म मरण की चिंता भागी समरथ नाम भजन लौ लागी ।
म्हारे सतगुरु दीनो सैन सत्य घर पो गयोरी ॥ १ ॥
चढ़ी सुरत पश्चिम दरवाजा त्रिकुटी महल पुरुष एक राजा ।
अनहद की झनकार बजे जहां बाजा री ॥ २ ॥
अपने पिया संग जाकर सोई संशय शोक रहा नहीं कोई ।
कट गये करम कलेश भरम भय भागा री ॥ ३ ॥
शब्द विहंगम चाल हमारी कहैं कबीर सतगुरु दई तारी ।

रिम झिम रिम झिम होय काल वश आय गया रे ॥ ४ ॥

शब्द २३

भजन में होत आनन्द अनन्त ॥ टेक ॥

बरसें शब्द अमी के बादल भीजें महरम सन्त ॥ १ ॥
कर अस्नान मगन हो बैठे चढ़ा शब्द का रंग ॥ २ ॥
अगर बास जहां तत की नदियां बहुत धारा गंग ॥ ३ ॥
तेरा साहिब है तेरे माहीं पारस परसे अङ्ग ॥ ४ ॥
कहत कबीर सुनो भाई साधो जपले ओं सोऽहं ॥ ५ ॥

शब्द २४

अमोघ नोबो लागे बाजे अनहद तूर ॥ टेक ॥

सोऽहं सोऽहं धुनि होत है चहुँ दिश रही भरपूर ॥ १ ॥
रैन दिवस घन घोर उठत है क्यों नेड़े क्या दूर ॥ २ ॥
कहत कबीर सुनो भाई साधु बर्षे नूर हो नूर ॥ ३ ॥

शब्द २५

मैं कैसे आऊंगी सांवरिया थारी त्रिकुट नगरिया ॥ टेक ॥

कौन निशानी थारो पंथ दुहेला चढ़त रैन मेरा तनमन जरिया।
जब लग नेहू थारो पहुँचत नाहीं तब लग आवे काली नगरिया
बेगमपुर कोई जन आवेंगे कम २ जिनके प्रेम की पुरिया ॥

कहैं कबीर कोई जनपहुँचे ब्रह्म अग्नपर जिनका तन मन,जरिया

शब्द २६

लगन बिन जागै ना निर्मोही ॥ टेक ॥

बिना लग्न की प्रीति बावरे ओस नीर ज्यों खोई ॥ १ ॥

हम तो रहते राम भरोसे रज़ा करै सोई होई ॥ २ ॥

बिन कृपा सतगुरु नहीं पावे लाख जतन करो कोई ॥३॥

कहैं कबीर सुनो भाई साधो गुरु बिन मुक्ति न होई ॥४॥

शब्द २७

माया हो रंग बादला जामें चन्दा हो दरशे नाह ॥ टेक ॥

काया में माया बसे ज्यों पत्थर में आग।

ओ तेरी इच्छा हरि मिलन की चकमक होके लाग ।१।

घोर कुराई तूंबरी जल में डूबे नांह।

वह डोवे वह ऊभरे कल्मी लागी नांहि ॥२॥

काम क्रोध के बने बदरवा गर्ज रहा अहंकार।

आशा तृष्णा बिचे बीजली भीज रहा संसार ॥३॥

ज्ञान पवन जब से चली सब बादल दिये उड़ाय।

कहत कबीर सुनोभाई साधो चन्दा हो दर्शा आय ॥४॥

शब्द २८

अजपाजाप जपो भाईसाधो श्वासों की करलो माला मोरे राम

हाथ सुमरनी बग़ल कतरनी यह क्या रचदियो चाला।
लोगों के भावें भक्ति कमावे साहेब के मुख काला ॥१॥
जब लग दरशे ना सच्चा साईं होवे ना घट उजियाला
बिन सतगुरु ताली नहीं लागे खुले न भ्रम का ताला ॥२॥
मन का मनियां फेर प्राणी क्यों हो रहा मतवाला।
गठड़ी खोल लाल नहीं परखा इस बिध आया दिवाला ॥३॥
साध सन्त की सेवा करले सन्तों का देश निराला।
कहत कबीर सुनों भाई साधों पीलो निर्गुण प्याला ॥४॥

शब्द २९

सुना है हमने निर्बल के बल राम ॥टेक॥
जब तक गज बल अपनो कीनो सरो ना एकहु काम।
जब गज ने हरि नाम सम्हारो आगये आधे नाम ॥१॥
हार मान·······································।
दीन होय जब द्रोपदी टेरो वसन रूप घनश्याम ॥२॥
बहुत ही साख सुनी सन्तन की अड़े संभारे हैं काम।
नरसी भक्त की हुण्डी पेली दिये रोकड़ा दाम ॥३॥
जप बल तप बल और भुजा बल चौथे बल है दाम।
कहत कबीर सुनो भाई साधो हारे के हरि नाम ॥४॥

शब्द ३०

कुछ लेना न देनी मगन रहना ॥ टेक ॥
पांच तत्त्व का बना पींजरा जामें बोले मेरी मैना ॥ १ ॥
तेरो पिया तेरे घटमें बसत हैं सखी खोलकर देखो नैना ॥२॥
गहरी नदिया नाव पुरानी खेवटिया से मिले रहना ॥३॥
कहैं कबीर सुनो भाई साधो गुरुके चरणोंमें लिपट रहना ॥४

शब्द ३१

जन्म तेरो बाता में बीत गयो, तैने कब हूँ न कृष्ण कह्यो ।टेक।
पांच बरस का भोला भाला अब तो बीस भयो ।
मकर पचीसो माया कारण देश विदेश गयो ॥ १ ॥
तीस बरस की अब मति उपजी लोभ बढ़े नित नयो ।
माया जोड़ी लाख करोड़ी अजहूँ न तृप्त भयो ॥ २ ॥
वृद्ध भये जब आलस्य उपज्यो जप तप कष्ट रह्यो ।
साधु की संगति कबहूँ न कीनी विरथा जन्म गयो ॥ १ ॥
यह संसार मतलब का लोभी झूठा ठाठ रच्यो ।
कहत कबीर समझ मन मूरख तू क्यों भूल गयो ॥ २ ॥

शब्द ३२

तुम देखो सन्तो भूल भुलैयां का तमाशा ॥ टेक ॥

ना कोई आता ना कोई जाता झूठा जगत का नाता ॥

ना काहू की बहन भानजी ना काहू की माता ॥ १ ॥

ड्योढ़ी लग तेरी तिरिया जावे पोली लग तेरा माता ।

मरघट तक सब जांय बराती हंस अकेला जाता ॥ २ ॥

एक तई ओढ़े दोतई ओढ़े, ओढ़े मलमल खासा ।

शाल दुशाला नितको ओढ़े अन्त ख़ाक मिल जाता ॥ ३ ॥

कौड़ी कौड़ी माया जोड़ी जोड़े लाख पचासा ।

कहत कबीर सुनो भाई साधो संग चले ना मासा ॥ ४ ॥

शब्द ३३

मैं तेरा स्वामी मुझे ना दिल से भूल ॥

तुही धरन में तुही गगन में तू मूलन का मूल ॥ १ ॥

तुही डार में तुही पात में तुही रंगीला फूल ॥ २ ॥

गोपीचन्द भरथरी राजा सिर में डारी धूर ॥ ३ ॥

दास कबीर शरण तेरी आया होवे अर्ज़ क़बूल ॥ ४ ॥

शब्द ३४

दिवाने क्या गावे घर दूर । टेक ॥

अनलहक़ कह हक़ को पहुँचा सूली चढ़ मंसूर ॥ १ ॥

शेख फरीद कुए में लटका गिरे तो चकनाचूर ॥ २ ॥

स्याही गई सफेदी आई चलना है बडी दूर ॥ ३ ॥
बलखबुखारे के बादशाह ने सौ सौ छोडी हूर ॥ ४ ॥
कहत कबीर सुनो भाई साधो हर दम हाज़िर हुजूर ॥५॥

शब्द ३५

गुरु ने मेरे बाण मारा ॥ टेक ॥
ना मारी मेरे छुरी कटारी शब्दों का मारा न्यारा न्यारा ॥ १ ॥
औषधि मूल मन्त्र नहीं लागे क्या करै वैद्य विचारा ॥ २ ॥
कच्चा कोट पक्का दरवाज़ा घायल आन पुकारा ॥ ३ ॥
कहैं कबीर सुनो भाई साधो लेवो नाम सहारा ॥ ४ ॥

शब्द ३६

मोको कहां ढूंढेर बन्दे मैं तो तेरे पास में ॥ टेक ॥
ना तीरथ मैं ना मूरत में ना एकान्त निवास में।
ना मन्दिर में ना मसजिद में ना काशी कैलाश में॥
ना मैं जप में ना मैं तप में ना मैं व्रत उपवास में।
ना मैं क्रिया करम मैं रहता ना मैं योग संन्यास में ॥१॥
नहीं प्राण में नहीं पिण्ड में ना ब्रह्माण्ड आकाश में।
ना मैं त्रिकुटी भँवर गुफा ऐं सब श्वासन की श्वास में ।२।
खोजी होय तुरत मिल जाऊं एक पल ही की तलाश में।

कहैं कबीर सुनो भाई साधो मैं तो हूँ विश्वास में ॥ ४ ॥

शब्द ३७

बने जो कुछ धर्म करले यही एक साथ जावेगा ।
गया अवसर न हेरे फिर यह हरगिज हाथ आवेगा ।।टेक॥
बिना बन के दुनियाँ में समय अनमोल खोता है ।
दिये लाखों की दौलत भी न पल रहने तू पावेगा ॥ १ ॥
धरी रह जायगी तेरी अकड़ सारी ठिकाने पर ।
जब आके यम जकड़ गरदन पकड़कर घर दबावेगा ॥ २
कुटुम्ब परिवार सुत जोई सहायक होगा नो कोई ।
तेरे पापों की गठड़ी खुद तू ही सिर पर उठावेगा ॥ ३
गर्भ में था कहा तूने न भूलूंगा प्रभु तुझ को ।
भला तू जायके अपना उसे क्या मुंह दिखावेगा ॥ ४
तुझे तो घर से जंगल में तेरा ही खुद व खुद बेटा ।
सुला कर लकड़ियों के ढेर पर तुझको जलावेगा ॥ ५
कहैं कबीर समझाई तू कहना मान ले भाई ।
नहीं तो अपनी ठकुराई वृथा सारी गंवावेगा ।। ६

शब्द ३८

मैं हार गई मेरे राम धन्धो करती करती घर को ॥ टेक ॥

उठ सवेरे पीसन लागो रह्यो पहर को तड़को ।
आग गेर पानी ने चाली है छोरा के जरको ॥ १ ॥
दुसर स्वभाव आकरो कह्यो बड़ बड़ाट को भड़को ।
सास निपूती कह्यो न माने बैठो मार मचड़को ॥ २ ॥
नणद हठीली हठकी पक्की सहज बुरो देवर को ।
पील पोय के हुई नचीती अबले बैठी चरखो ॥ ३ ॥
चार पहर धन्धे में बीते नाम लियो न हर को ।
कहें कबीर सुनो भाई साधो चौरासी को धड़ को ॥ ४ ॥

शब्द ३९

नारद मुनि मेरे सन्तों से अन्तर नाहीं (नारदमुनि ज्ञानी०)
सन्त चलें पाछे उठ चालुं मोहे सन्तन की आशा ।
जहां मेरे साधु भजन करें हैं वहीं हमारा बासा ॥ १ ॥
साध जेमें जहां भोजन जेमूं साध सोवें तहां सोऊं ।
जो कोई मेरा सन्त सतावे लाख जतन कर खोऊं ॥ २ ॥
लक्ष्मी मेरी अर्ध शरीरी सो सन्तन की दासी ।
अठसठ तीर्थ सन्तोंके चरणा कोटि गया और काशी ॥ ३ ॥
मन करम वचन चरण चित लावे सोइ परम पद पावे ।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो हरि अपने मुख गावे ॥ ४ ॥

शब्द ४०

हमारे प्रभु अवगुण चित्त ना धारो । ३

समदर्शी है नाम तुम्हारो चाहो तो पार करो ।टेक।

इक नदिया इक नार कहावत मैला नीर भरो।

जब मिल गये तब रूप एक भये गंगा नाम परो ।१।

एक लोहा पुजा में राखे एक घर बधिक पड़ो।

ऊंच नीच पारस नहीं जाने कंचन करत खरो।२।

अब की बेर मोय नाथ उबारो नहीं प्रण जात टरो ।

यह माया भ्रम जाल निवारो सूरदास सगरो ।३।

शब्द ४१

चले गये दिल के रामन गीर ॥ टेक ॥

जब सुध आवे तुमरे दर्श की उठें कलेजे पीर ॥ १ ॥

नट वर भेष नयन रतनारे सुन्दर श्याम शरीर ॥ २

वृन्दावन बंशी वट त्यागो निर्मल जमना नीर ॥ ३ ॥

आप हो जाय द्वारका छाये खारी नद के तीर ॥ ४ ॥

सब गोपिकन को नेह बिसारो ऐसे भये बे पीर ॥ ५

सूरदास ललिता उठ बोली आखिर जात अहीर ६ ॥

शब्द ४२

लज्जा मेरी राखो ना श्याम हरी।
कीनी कठिन दुशासन मो्य से गह केसो पकड़ी ॥टेक॥
आगे सभा दुष्ट दुर्योधन चाहत नगन करी।
पांचों पएड सभी बल हारे इन से कछु न सरी ॥ १ ॥
भीष्म द्रोण विदुर भये विस्मय इन सब मौन धरी।
अब नहीं मात पिता सुत बान्धव एक टेक तुमरी ॥ २ ॥
वसन प्रवाह दिये करुणानिधि सेना हार परी।
सूरदास जब सिंह शरण लई स्यारों की काहि डरी ॥ ३ ॥

शब्द ४३

किन तेरो गोविन्द नाम धरो ॥ टेक ॥
लेन देन के तुम हितकारी मोते कछु ना सरो ॥ १ ॥
विप्र सुदामा किये अयाचक तन्दुल भेट धरो ॥ २ ॥
द्रुपद सुता की तुम पत राखी अम्बर दान करो ॥३॥
सन्दीपन के तुम सुत लाये विद्या पाठ पढ़ो ॥ ४ ॥
सूर की बिरियां निठुर हो बैठे कानन मूंद धरो ॥ ५ ॥

शब्द ४४

सब दिन होत न एक समान ॥ टेक ॥

एक दिन राजा हरिश्चन्द्र गृह, लक्पति मेरु समान।
एक दिन जाय श्वपच घर सेवत, अम्बर हरत मशान ॥१॥
एक दिन दूल्ह बनत बराती चहुँदिस दुरत निशान
एक दिन डेरा होत जंगल में कर सूधे पग तान ॥ २ ॥
एक दिन सीता रुदन करत है महा विपिन उद्यान।
एक दिन रामचन्द्र मिल दोऊ विचरत पुष्प विमान ॥ ३ ॥
एक दिन राजा राज युधिष्ठिर अनुचर श्री भगवान।
एक दिन द्रोपदी नग्न होत है चीर दुशासन तान ॥ ४ ॥
प्रकटती है पूरब की करनी तज मन शोच अज्ञान।
सूरदास गुण कहं लग बरनों विधि के अङ्क प्रमान ॥ ५ ॥

शब्द ४५

अंखियां मोहन को बिन देखे रहा न जाय ॥ टेक ॥
जिन नयनन में श्याम बसत है दूजा नाहीं सुहाय ॥ १ ॥
काजर रेख फिर [illegible] लागे सुरमा नाहीं ठहराय ॥ २ ॥
मेरे अंगना म श्याम आयके मटकी लेत उठाय ॥ ३ ॥
और के डरते डरपत नाहीं जसुधा देख डराय ॥ ४ ॥
बंशी वारे मोहना बंशी नेक बजाय ॥ ५ ॥
तेरी बंशी ने मेरो मन हरो घर अंगना नहीं सुहाय ॥ ६ ॥
सूरदास प्रभु तुम से मिलन को हर से हेत लगाय ॥ ७ ॥

शब्द ४६

भजो रे मन गुरु सच्चिदानन्द ॥ टेक ॥

सकल ब्रह्माण्ड पुकारें जिन को अनन्त अपार अखण्ड ॥ १ ॥

पुष्प कुमार गगन में तारे वरणत सूरज चन्द ॥ २ ॥

सभी वस्तु की सुन्दरतायें जितलावे गोविन्द ॥ ४ ॥

ओंकार अज ज्योति स्वरूपा पूरण परमानन्द ॥ ५ ॥

शब्द ४७

तेरा यह खेल अपारा है जित देखूं तित तू ही तू है ॥ टेक ॥

तू ही वन में तू ही घर मंदिर में कूप बावड़ी तू ही सरवर में ।

ही सबका करतार भरम से न्यारा है ॥ १ ॥

इन्द्रियों में देखा तू ही मन है शुद्ध करण में तू ही पवन है

वरुणों तू ही वरुण जलों में गंगा धारा है ॥ २ ॥

ज्ञानी में ब्रह्म ज्ञान तू ही है योगी का मुख ध्यान तु ही है ।

सबका जीवन प्राण तू ही आधारा है ॥ ३ ॥

फूल पात फल डाल तू ही है कालों का महाकाल तु ही है ।

परमानन्द प्रकाश शब्द ओंकारा है ॥ ४ ॥

शब्द ४८

मेरे हो मन माना है गुरु नजर निहाल दयाल ॥ टेक ॥

अधर आकाश अधर वाकी बङ्गला घट २ आप समाना है ।१।
सबसे परे दूर नहीं नेड़े अद्भुत रूप लखाना है ।। २ ।।
भवसागर से उतरण कारण गुरु शब्द अलयाना है ।। ३ ।।
वह दरशन में पड़ी सट फटी बड़ा सोई जिन जाना है ।। ४ ।।
धीसा सन्त शरण सत्गुरु की जिन डारा मान गुमाना है ।।५।।

शब्द ४९

मन परदेशी हो यह नहीं अपना देश ।। टेक ।।

सत का कहना सत में रहना आनन्द रूप किसी का मथना ।
जो कोई कहे सभी को सहना येही रटन हमेश ।। १ ।।
गुरु का वचन सत्य कर मानो जगत जाल झूठा कर जानो ।
तत्वमसि का रूप पिछानो कट जांय करम कलेश ।। २ ।।
जो दीखे सो रूप हमारा कोई नहीं है हमसे न्यारा ।
मित्र और शत्रु कोई ना हमारा मिट गये राग और द्वेष ।। ३
शाह गुरु शुकदेव विराजे चरणदास चरणों में साजे ।
गुरु के वचन कभी नहीं त्यागे यही सत्य उपदेश ।।४।।

शब्द ५०

तू तो कोई अजब है तेरा अजब तमाशा जग में जोय । टेक ।
तू ही राम तैंने रावण मारा तू है नन्दकिशोर ।

तू ही इन्द्र इन्द्रासन तेरा तू बरसे घन घोर ॥ १ ॥
तू ही ब्रह्मा तू ही विष्णु महादेव तू कमला पति गौर ।
रूपों में रूप रूप धरे हैं तू ही करे है किलोल ॥ २ ॥
पांच तत्त्व और तीन गुणों में दशों दिशा चहुँ ओर ।
पिण्ड ब्रह्माण्ड में तू ही विराजे तू पूर्ण सब ठौर ॥३॥
तू ही गुप्त तू ही मुक्ता घट घट ब्रह्म चकोर ।
चरणदास रोचक कूं भावे दूजा नहीं है कोई ओर ॥५॥

शब्द ५१

हंसा चाल बसो वा देश जहाँ को बसा फेर ना मरे ॥टेक॥
जहाँ अगम निगम दोऊ धाम वास तेरा परे से परे ।
जहाँ वेदों की गम नाय ज्ञान और ध्यान भी डरे ॥१॥
जहाँ बिन धरणी बाट चरणों ते बिना गमन करे ।
जहाँ बिन शरवण सुन ले नयनों के बिन दरश करे ॥२॥
तहां बिन देही एक देव प्राणों के बिन श्वांस भरे ।
जहाँ जगमग जगमग होय उजारो दिन रात रहे ॥३॥
वहां प्रेम नगरिया के घाट अधर दरियाव बहे ।
जहां सन्त करैं असनान दूजा तो कोई न्हाय न सके ॥४॥
जाके न्हाये से सुख होय तपत तेरी तन की मिटे ।
तेरे जन्म मरण मिट जाँय चौरासी का फन्द कटे ॥५॥

यों कहते नाथ गुलाब अमरा पुर थारा बास करे।
गुण गावें भवानीनाथ आनन्द में सदा लगा ही रहे ॥६॥

शब्द ५२

मेरा राम सनेही जोगी रावलिया मेरी नगरी में उतारो है आय
चार कूंट की रम्मत करता धरती धरे न पांव।
तीन लोक झोली में राखे राई में रह्यो समाय ॥१॥
आओ सखी याय देखलें जीका रूप लखा नहीं जाय।
पीड़ो चाहे परतीत न छोड़ूं मेरे हिरदेमें रह्यो समाय ॥२॥
परजो काहु की ना रहूँ बिन दूर देखे रहा न जाय।
अचरज रूप धरा अविनाशी श्रीनाथ गुलाब लुभाय ॥३॥

शब्द ५३

घूंघट खोल दे तेरे पलकों के आगे है राम, भरम ने तोड़दे ॥
पलकों आगे अलख बावरी नूर रह्या भर पूर।
अन्दर बाहर सर्बस भरिया क्या नेड़े क्या दूर ॥१॥
शिर से शक उतार चुनरिया परदा भरम उठाय।
जब तुझे दूर से नित्य बावरी रोम रोम रह्यो छाय ॥२॥
पुस्तक लिखियो न जाय बावरो रेख खिचे ना लीक।
इड़िन सुखिम आवे सजनी पवना ते बारीक ॥३॥

दरिया लहर भेद ना होगी जीव ब्रह्म न होय ।
एक ही ब्रह्म सकल घट व्यापो दिलकी दुरमत खोय ॥४॥
हाथ में कंगन बांध सुहागन काय को लिया दुहाग ।
हाथ में मेंहदी नयनन सुरमा सारा श्रीनाथ गुलाब ॥५॥

शब्द ५४

बादला झुक आया भीजे म्हारो कायारो चीर ॥टेक॥
प्रेम घटा ओलर आई रे गगनसे तनमन भीज गया हरि रङ्गके
बरसे निर्मल नीर इन्दु ज्यों लहराया ॥ १ ॥
जहां बरसे जहां बिजली चमके घन गरजे और दामिनी दमके
बर्षे अमृतधार इन्द्र ज्यों झड़ लाया ॥ २ ॥
बस्ती बसो चाहे बन उठ जाओ,
तीरथ जाओ चाहे मत मत न्हावो ।
जिनका तन मन होगया फकीर शब्द में चित लाया ॥३॥
नाथ गुलाब दिया गुरु हेला भानीनाथ सुनो निज चेला
उलट पवन को डाट गगन थारो घर लाया ॥ ४ ॥

शब्द ५५

जिन्होंने मन मारलिया मैं तो उन सन्तों काई दास ।
आपा मार जगत में बैठे नहीं किसी से काम ।

इन में तो कुछ अन्तर नाहीं सन्त कहो चाहे राम ॥ १ ॥
मन मारा तन बस किया सभी भरम भये दूर।
बाहर तो कुछ सुझे नाही अन्दर झलके नूर ॥ २ ॥
प्याला पीलिया नामका जी छोड़ा जगत का मोह।
हमको सत्गुरु ऐसे मिल गये सहज मुक्ति गई होय ॥ ३ ॥
नरसी जी के सत्गुरु स्वामी दिया अमीरस प्याव।
एक बुन्द सागरमें मिल गई कहा करे यम राय ॥४॥

शब्द ५६

काम क्रोध मद लोभ मोह ने हो गुरु इनने मेरी मत मारी।टेक
केवल ब्रह्म रूप था मेरा पांच तत्व में लिया बसेरा।
इन्द्रिय आदि कर्म से लागी बुद्धि है सबसे न्यारी ॥ १ ॥
आदि जन्म का हूं अधिकारी दुःख में याद आई सुध सारी।
मनुवा खोज कमोल के देखा, बिगड़ रही केशर क्यारी ॥२
शून्य समाध में जाय समाया, चेला गुरवा कुछ नहीं पाया।
आपही आप पुकारत आया, अब समझा मूरख सारी ॥३
सहज ही आसन अमर सिंहासन, धुन में प्राण करे सुखवास
शरण मछुन्दर गोरख बोले ज्ञान आन हुवा हितकारी ॥४

शब्द ५७

सत्य नाम करतारे म्हारे सत्गुरु निश्चय सही सहारेमोरेरामा

राजा राम बसे घट भीतर बाहिर हाथ न आवे मोरे रामा ।
सतगुरु की तुम सेवा कर लो वो तुम्हें राह बतावे मोरे रामा
नाभि कमल से रस्ता चालियो सहज हो आवे जावे मोरे रामा
आगे महल त्रिकुटी कहिये वहां गये सुख पावे मोरे रामा ॥२
महल त्रिकुटी जगमग झलके देखत हो मुसकावे मोरे रामा ।
झीनी झीनी बाज होत अनहद की आगे को उठ धावे मोरे राम
गुरु प्रताप सन्त की सेवा खोजेंगे सोई पावे मोरे रामा ।
शरण मछन्दर जती गोरख बोले गुरु अपना दरशावे मोरे रामा

शब्द ५८

बंगला भला बना दरवेश जामें नारायण परवेश ॥टेक ।
पांच तत्व की ईंट बनाई तीन गुणों का गारा ।
छत्तीसों की छात बनाकर चिन गया चिनने हारा ॥१
इस बंगले के दस दरवाजे बीच पवन का थम्भा ।
आवत जात कोऊ न जाने देखो बड़ा अचम्भा ॥२
इस बंगले में चौपड़ मांडी खेलें पांच पचीस ।
कोई तो बाजी हार चला है कोई चला जुग जीत ।३
इस बंगले में पातर नाचे मनुआ ताल लगावे ।
सुरत निरत के पहर घूंघरू राग छत्तीसों गावे ॥४

कहैं मछन्दर सुन बोले गोरख लिखदे यह बंगला भावा।
इस बंगले का गाने वाला बहुर जन्म नहीं आया ॥५॥

शब्द ५९

मारग में लूटें पांच अनी। टेक॥
पांच पचीसों ने घेरा घाटा साधु जन चढ़ गये उलटी बाटा।
घेर लिया सब औघट घाटा कलियुग चमके सेल अनी ॥१॥
वन में लुट गये मुनि जन नागा उल गई ममता उलटा भागा
जाके कान गुरु ना लागा शृंगी ऋषि से आन बनी ॥२॥
आशा तृष्णा नदियां भारी वह गये सन्त बड़े डिम धारी।
जो उभरे सो शरण तिहारी पार लगाइयो आप धनी ॥३
शंकर लुटगये नेजा धारी परजा रैयत कौन विचारी।
भूल पड़ी करमन की भारी तिरगुण फूक रही तीन अनी॥४
रामानन्द मिला गुरु हेला दास कबीर चरण का चेला।
बंका मारग पन्थ दुहेला सिमिरो निरञ्जन द्वार धनो ॥५

शब्द ६०

सुरत मेरी राम से लगी समझ सुहागन नार,
तीरथ में माया जाल में फंसी॥ टेक॥
लगनी लहंगा पहर सुहागन बीती आय बहार।
धन जोबन है पावना रो, आवे न दूजो बार॥ १॥

शब्द ६१

श्री मन्नारायण नारायण नारायण ॥ टेक ॥

जाको नाम लेत अघ नाशे काम क्रोध भये जारायण ।

शिव सनकादि आदि ब्रह्मादिक सुमर २ भये पारायण ॥श्री० १

क्रीट मुकुट मकराकृत कुण्डल शंख चक्र गदा धारायण ।

शवरी के फल रुचि२ पाये भक्त सुदामा तारायण ॥ श्री० २ ॥

अजामेल सुत हेतु पुकारे नाम लेत भये पारायण ।

दुर्योधन घर मेवा त्यागी साग विदुर घर पायायण ॥ श्री० ३ ॥

जल डूबत गजराज उबारे चक्र सुदर्शन धारायण ।

डूबत से ब्रज राख लियो है कर पर गिरवर धारायण ॥श्री० ४

चार वेद और भगवद्गीता वालमीक जी की रामायण ।

जो नारायण नाम लेत है मात पिता कुल तारायण ॥ श्री० ५ ॥

सुवा पढ़ावत गणिका तारी नाम जपत भई पारायण ।

भरी सभा में लज्जा राखी द्रौपद चीर बढ़ायायण ॥ श्री० ६ ॥

पावक से प्रहलाद उबारे नरहर वपु प्रगटायायण ।

वृन्दावन में रास रचो है गोपिन संग नृतायायण ॥ श्री० ७ ॥

जहां जहां भार होत भूमि पर तहां २ लेत अवतारायण ।

स्थावर जंगम सब ही मोहे मुरली नाद सुनायायण ॥ श्री० ८॥
प्रेम समाज सकल मिल बैठो हरि के चित धारायण ।
माधोदास आस चरणन की भवसागर भये पारायण ॥श्री० ९॥

शब्द ६२

सो मेरी तेरी नाह बने रे मनोराम ॥ टेक ॥
मैं चाहूं सतसंगति करण तू चाहे धन धान ॥ १ ॥
मैं चाहूं निशकाम करन को तू है पुरुष सकाम ॥ २ ॥
मैं चाहूं सतगुरु की सेवा तू है नमक हराम ॥ ३ ॥
मैं चाहूं ईश्वर की भक्ति तेरी उठे ना छदाम ॥ ४ ॥
सदानाथ सतगुरु की सेवा पायो पद निर्वान ॥ ५ ॥

शब्द ६३

सन्तों आगे कौन चीज़ बादशाही ॥ टेक ॥
बादशाह ने दुलहा बनके दश छोड़ी दश ब्याही ।
तन पै खाक सन्त दुलहे ने लाई तो ओड़ निबाही ॥ १ ॥
बादशाह घर नौबत बाजें पातर फिरें उमाही ।
अनहद बाजा बजे सन्त के सुन सुन मस्त इलाही ॥ २ ॥

बादशाह की भरे न तृष्णा कर दिये मुल्क तबाही ।
सन्तों के सन्तोष खजाना हरदम अटल अथाई ॥ ३ ॥
बादशाह चितवे मन चाही साध सन्त हर चाही ।
शम्भूदास मद्वा सन्तन का चन्दा में दोष न स्याही ॥ ४ ॥

शब्द ६४

तेरा यह खेल अपारा है, जित देखूं तित तू ही तू है ॥ टेक ॥
तू ही बन में तू ही घर मन्दिर में, कूप बावड़ी तू ही सरवर में ।
तू ही सबका करतार, भरम से न्यारा है ॥ १ ॥
इन्द्रियों में देखा तू ही मन है, शुद्धकरण में तू ही पवन है ।
वरणों में तू ही वरण, जलों में गंगा धारा है ॥ २ ॥
ज्ञानी में ब्रह्मज्ञान तू ही है, योगी का मुख ध्यान तू ही है ।
सबका जीवन प्राण, तू ही आधारा है ॥ ३ ॥
फल पात्त फल डाल तू ही है कालों का महाकाल तू ही है ।
परमानन्द प्रकाश, शब्द ओंकारा है ॥ ४ ॥

भजन ६५

धरम मत हारो रे जग में जिन्दगी दिन चार ॥ टेक ॥

अगम लोक से चलकर आया, पल्ले खर्चा कुछ नहीं लाया।
यहां आके गढ़ कोट चिनाया, यूंही जाता संसार ॥ १ ॥
धरमराज के जाना होगा, सारा हाल सुनाना होगा।
फिर पीछे पछताना होगा, करलो ना सोच विचार ॥ २ ॥
अब तो चेत करो मेरे भाई, तैंने वृथा उमर गंवाई।
तैं धोके काया लुटवाई, भज राम नाम है सार ॥ ३ ॥
बार२ सत्गुरु समझावे, मिनखा जनम बहुर नहीं पावे।
गया वक्त फिर हाथ न आवे, श्री स्वामी जी कहैं हरबार ॥ ४

शब्द ६६

यह जग रोगिया रे, जाने सत्गुर वैद्य न जाना ॥ टेक ॥
जनम मरन का रोग लगा है, तृष्णा रूपी खांसी।
आवागमन की डोर, गले बिच पड़ी काल की फांसी ॥ १ ॥
सच्चा सत्गुरु कोई न पूजे, झूठा जग पतियावे।
अन्धे बांह गही अन्धे की, मारग कौन बतावे ॥ २ ॥
सच्चा शब्द सजीवन बूंटी, घिस कर अङ्ग लगावे।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, बहुर जन्म नहीं आवे ॥ ४ ॥

शब्द ६७

कहो जी कैसे तारोगे, मेरो अवगुण भरो है शरीर ॥ टेक ॥
अंका तारे बंका तारे, तारे सजन कसाई।
सूवा पढावंत गणिका तारी, तारी है मीरांबाई ॥ १ ॥
धना भक्त को खेत जमायो, नामे छान छवाई।
सैन भक्त को स्वांसो मेट्यो, आप बने हर नाई ॥ २ ॥
ध्रुव तारे प्रह्लाद उभारे, और गजराज उधारे।
नरसी जी के भात भरन को, रूप सांवरो सो धारे ॥ ३ ॥
काशी के हम वासी कहिये, मेरा नाम कबीरा।
करनी करके पार उतर गये, जाति वरण कुल हीना ॥ ४ ॥

शब्द ६८

मन लागा राम फक़ीरी में ॥ टेक ॥
जो सुख देखा हरि के भजन में, सो सुख नांह अमीरी में ॥ १ ॥
भली बुरी सबकी सुन लीजे कर गुज़रान गरीबी में ॥ २ ॥
हाथ में कूंडी बगल में सोटा, चारों कूंट जगीरी में ॥ ३ ॥
आखिर यह तन खाक मिलेगा, क्या फिरता मग़रूरी में ॥ ४ ॥
कहै कबीर सुनो भाई साधो, साहब मिले सबूरी में ॥ ५ ॥

नम्र निवेदन ।

मेरे प्यारे बन्धु वर्ग ! यदि आप स्वयं सुख और शान्ति चाहते हैं और संसार को सुखमय व शान्त बनाना चाहते हैं ; तो उस कल्याणकारिणी भक्ति का आचरण कर संसार में भक्ति फैलाने का प्रयत्न करो । जिस भक्ति में मग्न होकर ऋषि मुनि नृत्य करते थे, जिस भक्ति के बल से भगवान राम और कृष्ण ने संसार को स्वर्ग बना दिया था उसका रस पान करने और कराने के लिये उन ऋषि, मुनि महात्माओं के बनाए गीत गाओ और उन गीतों को फैलाओ । मोक्ष में भक्ति से बढ़कर कोई साधन नहीं है और उपासना में गाने से बढ़कर कोई तरीका नहीं है । देश के नर नारी और बालक यदि प्रेम में मग्न होकर भगवान के गीत गायेंगे तो भगवान अवश्यमेव मनवाञ्छित फल प्रदान करेंगे ।

भक्तों का दास--**दलीप** बनस्थी

श्री भगवद्भक्ति आश्रम,

रामपुरा पो० रेवाड़ी (दिल्ली)

॥ ओ३म् ॥

भगवद्भक्ति आश्रम,

रामपुरा ।

यह आश्रम रेवाड़ी जंकशन से पश्चिम दिशा में लगभग एक कोस के अन्तर पर जंगल में अति पवित्र भूमि में बना है जल की सुविधा के लिये एक कूप है दूसरा तालाब "रामसर" तीर्थरूप जो अभी खोदा जारहा है उसमें पक्के घाट बनाए जाने का आयोजन होरहा है तालाब के आस पास कई बीघों में उपयोगी वृक्ष लगे हैं लगभग ६०० बीघे भूमि आश्रम से लगी हुई गौओं के चरने के लिये श्री लेफटीनेएट राव बलबीरसिंह जी ने आश्रम के लिये प्रदान की है जिसमें गौ, मृग आदि स्वछन्द चरते हैं। इस बन में शिकार नहीं खेला जाता।

इस समय आश्रम में एक ब्रह्मचर्याश्रम, साधारण पाठशाला, कन्या पाठशाला, अछूत पाठशाला और अतिथियों व सत्सङ्गियों के ठहरने का स्थान व एक पुस्तकालय है।

उद्देश्य ।

१-श्री भगवान की भक्ति का प्रचार करना ।

२-गौ रक्षण और उसके लिये गोचर भूमि छुड़वाना ।

३-जङ्गलों में वृक्ष लगवाना और बीच में जलाशय बनवाना ।

४-शिक्षा का प्रचार करना (जिसमें मनुष्य मात्र विद्यालाभ कर सकें) और प्राचीन प्रथा का फिर प्रचलित करना ।

५-बीमारियों के अवसर पर दवाई बांटना ।

६-आस पास के ग्रामों में परस्पर के झगड़े और वैमनस्य मिटा कर शान्ति और प्रेम बढ़ाना ।

७-सब संस्थाओं में भगवद्भक्ति और धर्म का भाव जाग्रत करना

८-राजा और प्रजा सब ही का हित चिन्तन करना ।

यह आश्रम नियमानुसार एक कमेटी की संरक्षता में है आश्रम से सत्यशब्द-संग्रह, सारसंग्रह और भक्तियोग-संग्रह महसूल डाक के टिकट भेजने पर मुफ्त भेजी जाती है ।

नोट—आश्रम से "ज्ञानयोग भक्तिमार्ग" नाम का मसिक पत्र हिन्दी भाषा में प्रकाशित करने का विचार है यदि भक्तजन यत्न करके ५०० ग्राहकों के नाम भेजदें तो पत्र शीघ्र जारी कर दिया जावे ।

पुस्तक मिलने का पता—

श्री भगवद्भक्ति आश्रम,

रामपुरा

पो० रेवाड़ी (दिल्ली)